विचार बिन्दु

दीपक सोने का हो या मिट्टी का मूल्य दीपक का नहीं उसकी लौ का होता है जिसे कोई अँधेरा नहीं बुझा सकता। –विष्णु प्रभाकर

महर्षि अग्निवेश के कल्याणकारी प्रश्न

प्रश्न पूछना और उनका उत्तर देना एक गंभीर कला है। इसमें पूर्व से उपलब्ध साहित्य, संहिताओं, वैज्ञानिक ज्ञान और अनुभवजन्य ज्ञान की समग्रता को समेटना पड़ता है। आज से कम से कम 5000 वर्ष पूर्व ऐसे ही कुछ कल्याणकारी प्रश्न आचार्य अग्निवेश ने अपने गुरु भगवान आत्रेय से पूछा था।

दरअसल, आयुर्वेद को पूर्ण विस्तार से समझाने-समझने के बाद आचार्य अग्निवेश को लगा कि आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन एवं औषधियों के संदर्भ में भगवान आत्रेय प्रत्येक विषय को सम्हालने के लिये अनेकानेक कारक स्पष्ट किये हैं। तो क्या इन तमाम कारकों में से कुछ ऐसे कारक नहीं हैं जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण हों? आचार्य अग्निवेश अपनी जिज्ञासा नहीं रोक पाये और अंत में गुरुदेव से पूछ ही लिया।

गुरुश्रेष्ठ! आपने आयुविज्ञान को बहुत विस्तारपूर्वक समझाया। जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करने वाले अनेकानेक कारक बताये। परन्तु इन कारकों में कोई तो सबसे महत्वपूर्ण या श्रेष्ठतम होगा? क्या प्राणवर्धन करने वालों में एक, बलवर्धन करने वालों में एक, बृंहण या वृद्धि करने वालों में एक, नंदन या समृद्धि करने वाले कारकों में एक, मन को प्रसन्न करने वालों में एक, और मार्गों में एक सर्वश्रेष्ठ मार्ग है? --आचार्य अग्निवेश ने पूछा।

आचार्य अग्निवेश के इन प्रश्नों को आप हल्के में नहीं ले सकते। क्यों? बात यह है कि प्राणवर्धन का सबसे महत्वपूर्ण कारक जान लेने से दीर्घायु या लंबी जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण सूत्र तो मिल जायेगा किन्तु ऐसी लम्बी आयु किस काम की है जो बलवान या ऊर्जावान न हो, जो बृंहण या वृद्धि से समुचित भरपूर न हो, जिसमें समृद्धि और प्रसन्नता न हो, और अंततः जिसमें सद्गति या मोक्ष न मिले। इसलिये आचार्य अग्निवेश द्वारा पूछे गये प्रश्नों का यह समुच्चय बेहद रोचक, गूढ़ और कल्याणकारी है। दुर्भाग्यवश, चरकसंहिता के तमाम व्याख्याकार इन प्रश्नों की गहराई, गूढ़ता और निहितार्थ को कभी नाप नहीं पाये। इसलिये आज की चर्चा इन प्रश्नों पर है।

इस प्रश्नों पर भगवान आत्रेय द्वारा दिया गया उत्तर कई कारणों से महत्वपूर्ण हो जाता है। इनकी चर्चा हम करेंगे, पर पहले उत्तर देखिये।

आयुर्वेद को जानने वाले ऐसा मानते हैं कि प्राणियों के प्राण बढ़ाने वाले कारकों में सबसे श्रेष्ठ अहिंसा, बलवर्धन करने वालों में वीर्य (जोश, बहादुरी या वीर्य) बहादुरी, बृंहण या वृद्धि करने वालों कारकों में विद्या, समृद्धि करने वालों में इंद्रियों पर विजय, मन को प्रसन्न करने वाले कारकों में तत्वज्ञान या सच्चाई का ज्ञान, और मार्गों में ब्रह्मचर्य सबसे उत्कृष्ट है। –आत्रेय का उत्तर था।

आत्रेय के उत्तरों की तीन विशिष्टतायें देखना आवश्यक है। पहली विशेषता यह है कि उत्तर में जिन एक-एक सर्वश्रेष्ठ कारकों को दर्शित किया गया है उनमें एक भी द्रव्य नहीं है बल्कि सभी अद्रव्य कारक हैं। जीवन में केवल द्रव्य ही महत्वपूर्ण नहीं हैं बल्कि अद्रव्य भी उतने ही महत्वपूर्ण हो सकते हैं। उदाहरण के लिये प्राणवर्धक तो आहार भी है किन्तु अहिंसा ही उत्कृष्ट है क्योंकि हिंसा प्राणघातक और अहिंसा प्राणवर्धक होती है। अद्रव्य होने से हम इनका सदैव और अनवरत उपयोग तो कर ही सकते हैं, साथ ही ये बिना किसी अतिरिक्त आर्थिक लागत हमें सदैव उपलब्ध हैं। दूसरी विशेषता यह है कि आत्रेय ने यहाँ उत्तर केवल अपने ज्ञान को आधार मानकर नहीं दिया। यहाँ पर उन्होंने प्रश्नों का उत्तर देने के लिये उस वैज्ञानिक विधि का सहारा लिया है जिसे वर्तमान में एक्सपर्ट-जजमेंट के नाम से जाना जाता है। यही कारण है कि आत्रेय ने अपने उत्तर में इस स्पष्टीकरण का समावेश किया है कि आयुर्वेद को जानने वाले ऐसा मानते हैं। इसका अर्थ यह है कि तत्समय में आयुर्वेद के विद्वानों के मत का निचोड़ आत्रेय ने अग्निवेश को दर्शित किया है। आत्रेय के इन उत्तरों का स्पष्ट अभिप्राय यह भी है कि ऐसा केवल मैं नहीं कह रहा हूं बल्कि मैंने आयुर्वेद के विद्वानों के मध्य उपलब्ध ज्ञान को एक्सपर्ट-जजमेंट के आधार पर प्राप्त कर, आज की भाषा में कहें तो प्रिंसिपल कॉम्पोनेंट एनलिसिस से ज्ञात हुआ सबसे महत्वपूर्ण कारक दर्शित किया है। यहाँ एक महत्वपूर्ण सन्देश यह भी है कि जब प्रश्न का उत्तर व्यापक प्रयोज्यता के लिये हो या अनेक कारकों में से एक प्रधान कारक की खोज पर चिंतन चल रहा हो तो अनेक विद्वानों के विचार को समाहित कर समग्र उत्तर देना उपयोगी है। तीसरी बात यह है चरकसंहिता में यह प्रसंग वस्तुतः हृदय रोगों से बचाव के वर्णन के तुरंत बाद निरंतरता में आया है। इस तथ्य के प्रकाश में देखने पर एक यह सन्देश भी स्पष्ट होता है कि अहिंसा, वीर्य, विद्या, इन्द्रियजय, तत्वबोध और ब्रह्मचर्य जैसे अद्रव्य, किन्तु सभी नागरिकों पूर्णतः क्रियान्वयन-योग्य, भावों की हृदय रोगों से बचाव में भी विशेष भूमिका है। यदि इस दिशा में ध्यान दिया जाये तो भारत को हृदयरोग सहित तमाम गैर-संचारी रोगों की वैश्विक राजधानी होने के कलंक से मुक्ति मिल सकती है।

आयुर्वेद का मत है कि मैथुन की अधिकता से अनेक रोग होते हैं किन्तु यदि सेक्स की इच्छा को दबाया जाता है या शुक्र-वेग धारण किया जाता है तो स्वास्थ्य-विषयक अनेक समस्यायें जैसे जननेंद्रिय, टेस्टिकल्स, शरीर और हृदय में दर्द, और मूत्र-विसर्जन में रुकावट और दर्द के लक्षण खड़े हो जाते हैं। मैथुन न करने से प्रमेह, मोटापा, तथा शारीरिक शिथिलता होती है।

इस चर्चा का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? वस्तुतः इस बात को समझने के लिये उत्तरों के निहितार्थ समझना आवश्यक है। सबसे पहला सन्देश तो यह है कि केवल लंबी आयु किसी काम की नहीं है। बीमार शरीर में लम्बे समय तक प्राण तो अटके रह सकते हैं परन्तु ऐसी आयु सुखायु और हितायु की श्रेणी में नहीं गिनी जाती। आयु ऐसी हो जिसमें मानसिक और शारीरिक बल और वृद्धि हो, समृद्धि हो, आनंद हो और जो इन्द्रिय-संयम के मार्ग पर चले। इन प्रश्नों और उत्तरों में इस महत्वपूर्ण समुच्चय का पूरा पूरा ख्याल रखा गया है।

अहिंसा प्राणवर्धक कारकों में श्रेष्ठतम कैसे है? दरअसल, हिंसा के सभी प्रकार, डांट-डपट, चिल्लाना, मारपीट करना, प्रताड़ित करना आदि जीवित कोशिकाओं में ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इन्फ्लेमेशन को बढ़ा देते हैं। ऐसी दशा में बुढ़ापा जल्दी आता है और समय-पूर्व मृत्यु की संभावना बढ़ती है। स्वाभाविक है कि अहिंसा प्राणवर्धन में सबसे श्रेष्ठ है।

इसी प्रकार बल को बढ़ाने वाले कारकों में वीर्य सबसे बेहतर है। वीर्य या जोश आत्मविश्वास को बढ़ाता है। व्यक्ति को बलशाली बनाने में जोश का अद्वितीय योगदान रहता है। इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है जब सेना-नायकों ने अपनी फौज में जोश दिलाकर हारे हुये युद्ध जीते हैं।

बृंहण या वृद्धि करने वाले कारकों में विद्या को सबसे उत्तम माना गया है। विद्या केवल मन और शरीर का बृंहण नहीं करती, बल्कि जीवन की समग्रता का बृंहण होता है। वस्तुतः शारीरिक और मानसिक विकास में विद्या, जिसमें ज्ञान और कौशल शामिल हैं, का बड़ा योगदान है। जानकारी,ज्ञान कौशल के बिना शरीर का पोषण या वृद्धि नहीं हो सकती। विद्या-विहीन व्यक्ति आहार, विहार, सद्वृत्त, स्वस्थवृत्त, पंचकर्म, रसायन और औषधियों के महत्त्व को कभी नहीं समझ सकता। और इन सबकी समझ और क्रियान्वयन के बिना समुचित मानसिक और शारीरिक पोषण, विकास या वृद्धि नहीं होती।

समृद्धि देने वाले कारकों में इंद्रियों पर विजय सबसे महत्वपूर्ण है। वास्तव में आंख, नाक, कान, जीभ व चमड़ी मन के नियंत्रण हों तो रोग नहीं होते। आरोग्य या रोगरहित हुये बिना समृद्धि नहीं प्राप्त हो सकती। असल में आरोग्य के बिना अर्थ, धर्म, काम या मोक्ष कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। जीवन में खुशी चाहिये तो याद रखिये कि आरोग्य ही सुख है और विकार ही दुःख है। इसीलिये समृद्धि में इन्द्रिय-जय का अद्वितीय योगदान है।

प्रसन्नता देने वाले कारकों में तत्वबोध या सच्चाई का ज्ञान सबसे महत्वपूर्ण कारक है। यथार्थ ज्ञान के बिना व्यक्ति निरुद्देश्य भटकता रहता है। ऐसे व्यक्ति जीवन के महत्वपूर्ण लक्ष्यों को भी नहीं साध पाते। तत्वबोध मन को प्रसन्न करने वाले कारकों में इसीलिये सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

अंततः, मार्गों में ब्रह्मचर्य सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। ब्रह्मचर्य का मूल दर्शन वस्तुतः मैथुन के पूर्ण प्रतिबन्ध पर नहीं बल्कि इन्द्रिय-संयम और आत्म-नियंत्रण पर केन्द्रित है। आयुर्वेद का मत है कि मैथुन की अधिकता से अनेक रोग होते हैं किन्तु यदि सेक्स की इच्छा को दबाया जाता है या शुक्र-वेग धारण किया जाता है तो स्वास्थ्य-विषयक अनेक समस्यायें जैसे जननेंद्रिय, टेस्टिकल्स, शरीर और हृदय में दर्द, और मूत्र-विसर्जन में रुकावट और दर्द के लक्षण खड़े हो जाते हैं। मैथुन न करने से प्रमेह, मोटापा, तथा शारीरिक शिथिलता होती है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों में भी इन तथ्यों की पुष्टि होती है। इन समस्याओं से बचने के लिये पति-पत्नी के मध्य प्रगाढ़ शारीरिक रिश्ते क्लिनिकल दृष्टि से उचित और स्वास्थ्य के लिये हितकर हैं। चरकसंहिता में वाजीकर द्रव्यों और अद्रव्यों के माध्यम से चिकित्सा का विस्तृत वर्णन यह स्पष्ट रूप से सिद्ध करता है कि गृहस्थों के लिये सेक्स पूर्ण-त्याज्य कभी नहीं रहा। पर इस बात को ध्यान रखें कि इन्द्रियों के संयम के बिना मानव का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय अस्तित्व सदैव संकट में ही रहता है।

ध्यान दीजिये आचार्य अग्निवेश के प्रश्न और आत्रेय के उत्तर वस्तुतः जीवन की समग्रता और उसे सम्हालने वाले श्रेष्ठ कारकों को समेटे हुये हैं। यहाँ केवल प्राणवर्धन या दीर्घायु मात्र का सूत्र जानने की जिज्ञासा नहीं है बल्कि ऐसे सूत्र जानने की जिज्ञासा है जिसमें दीर्घायु, हितायु और सुखायु अपनी समग्रता में हो। ऐसी लम्बी उम्र किस काम की होगी जिसमें शरीर में बल न रहे। इसीलिये दूसरा प्रश्न बलवर्धन पर केन्द्रित है। इसी प्रकार, लम्बी आयु और बल के साथ-साथ वृद्धि, समृद्धि और हर्ष और अंततोगत्वा सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्ग को समझने का प्रयास किया गया है।

हितकारी और सुखकारी जीवन ही जीने योग्य जीवन है। आचार्य अग्निवेश के प्रश्नों और उनके महान गुरु आत्रेय द्वारा दिये गये उत्तरों के निहितार्थ समझिये। और उसी के अनुरूप अहिंसा, वीर्य, विद्या, इन्द्रियजय, तत्वबोध और ब्रह्मचर्य को सहेजिये। ये अद्रव्य कारक बिना किसी अतिरिक्त धन का निवेश किये आपके पास सदैव उपलब्ध हैं। आजीवन मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ और सुखी रहेंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

मनुष्य एवं पशु श्रेणी के हित में सरकार उन पर हिंसकता की पक्षधर क्यों?

प्रो. वीर बहादुर सिंह

यह लेख लिखने की मेरी मंशा बलवती इसलिए हुई कि विगत एक-डेड दशक से प्रिंट मीडिया और टेलीविज़न पर ऐसी ख़बरों की भरमार है जैसी देश में पहले कभी न सुनी और न देखी। अब मारकाट, हिंसा, पशु वध, पशुओं विशेष रूप से सड़क के कुत्ते और सबसे ऊपर बालिका बलात्कार और फिर उसका वध। कुछ अवसरों पर पालतू कुत्ते भी अनायास ग्रुप में किसी पर भी आक्रमण कर घायल कर देते हैं। पालतू और जंगलों के हिंसक पशु अब आये दिन आबादी क्षेत्र में घुस कर सड़क के कुत्तों अथवा जो भी अकेला प्राणी चाहे आदमी हो या महिला, व्यस्क हो अथवा बालक, बूढ़ी औरत हो, आदि को अपना शिकार समझ अचानक हमला कर घायल कर देते हैं। शिकार वजन में हल्का हो तो उसे मुहं में दबा कर कही एकांत जगह पर उसे खा जाते हैं। अरब के कुछ देशों में जंगली हिंसक पशुओं को बादशाओं द्वारा पालने का चलन तो है अन्य कही नहीं। अब तो बघेरा, पैंथर, लकडभग्गे, सियार और कुछ घरों में रोटी पाने वाले तथाकथित अधकचरे पालतू कुत्ते भी हिंसक होकर सड़क चलते मनुष्यों, छोटे बच्चो, अकेली चारा लाती/काटती महिला आदि को अनेक स्तिथिओं में हमला कर घायल कर देते हैं या मार देते हैं।

शहरों में सम्बंधित विभाग के कर्मचारी शिकायत मिलने पर ऐसे कुत्तों को पकड़ने का नाटक तो प्रायः करते हैं परन्तु किसी दूसरी कॉलोनी/जगह पर उन्हें मुक्त कर देते हैं। किसी को क्या पड़ी है? उन कुत्तों को उनके रिहायसी क्षेत्र से विस्थपित करना। राजस्थान के कुछ जिलों में फिलहाल पैंथर की आवक काफी चर्चा में रही, कई स्थानों पर पिजरे लगाए गए लेकिन ख़ास मेहमान झांसे में नहीं आये और संभवतः अपने लिए खतरा भांप कर किसी दूसरे क्षेत्र में पलायन कर गए। ग्रामीण परिवेश के लोगों ने संतोष की सांस ली।

अभी राजस्थान के कुछ स्थानों पर पैंथर का बड़ा खौफ रहा। हर दिन एक न एक खबर पैंथर द्वारा हमले की पढ़ने को मिलती रही। मेरी रूचि केवल ऐसी खबर तक ही सीमित रही क्योंकि मैं देख रहा था कि आखिर सरकारी महकमे इस बावत क्या करते हैं? याद रहे सरकारी कर्मचारी जो ऐसे कामों में लगाए जाते हैं उनके भी परिवार होता है, बच्चे होते हैं, रात को घर पर सभी उनकी बाट जोहते हैं। परन्तु सरकारी तंत्र ऐसी स्थिति में भी निर्लिप्त बनी रहती है क्योंकि उनके किसी घर वाले की जान को जोखिम नहीं होता, बाकी मरते रहो। जंगली जानवरों से दो-चार होने पर यदि आदमी केवल लाठी-डंडे से हिंसक पशु पर काबिज होना चाहे तो असंभव है।

फायर आर्म अथवा बंदूकें तो पुलिस वालों से तो आज़ादी की उपरांत बहुत पहले ही मालखाने में जमा करवाली और एक तीन फ़ीट का बांस का डंडा या बेंत पकड़ा दिया। अब बेटा लोकतंत्र/प्रजातंत्र है हिंसक चाहे पशु हो अथवा मानव सभी अपने स्वभाव अनुरूप व्यवहार करने को स्वतंत्र हैं। पहले घटना को घट लेने दीजिये फिर पुलिस पशु/प्राणी की उपयोगिता समझ अनुकरणीय कार्यवाही शुरू करेगी। घटना घटी नहीं और हो-हल्ला मचाना शुरू करना अवांछनीय तो है ही लोक तंत्र में किसी एक के प्रति दुर्भावना और अवांछनीय कृत्य भी अपराध ही माना जायेगा।

इसलिए आज़ादी के बाद हमारी सरकार ने जो जो कदम सबकी आज़ादी के लिए उठाये वे सभी दृष्टिओं से कानूनन और सर्व ग्राही ही माने जाते हैं। ऐसी घटनाओं में यदि कोई मानव प्रजाति का मर जाता है तो सरकार बिना देर किये अपना अमला वहां भेज कर आर्थिक मदद/सहायता की घोषणा करवा देती है और इस प्रकार मामला निपट जाता है। ऐसे शिकार और शिकारी आये दिन कुछ न कुछ करते ही रहते हैं और गाँव/ढाणीओं में जीवन थोड़े से ठहराव के बाद पुनः बहाल हो जाता है जैसे कुछ हुआ ही नहीं। अनेक स्थानों पर मेहमान को कैद करने के लिए पिंजड़ों को भी लगाया गया लेकिन मेहमान मानव के झांसे में नहीं फसे और किसी अन्य जिले की तरफ पलायन कर गए।

मैंनें काफी वर्ष पूर्व एक प्रसिद्ध आदमखोर टाइगर (दुगड्डा मैनेटर) का किस्सा सुना था, यह टाइगर आदमखोर हो चुकी थी और व्यस्क थी, दुगड्डा उत्तराखंड में स्थित है। उस आदमखोर टाइगर का कुछ समय के लिए बड़ा खौफ और आतंक था। उसे तब मारने के लिए भी कोई दुस्साहस नहीं कर सका था। फलस्वरूप मशहूर वन विशेषज्ञ, जिनके नाम से नैनीताल के पास उस सैंक्चुअरी का नाम रखा गया उन्हें विदेश से बुलाना पड़ा था। उनका नाम था जिम कॉर्बेट। उत्तराखंड के पुराने लोग अभी भी दुगड्डा आदमखोर टाइगर(बाघ) और जिम साहब को याद करते हैं। कोटद्वार से सड़क मार्ग से जब ऊपर लैंसडौन जो एक फौजी छावनी कैंप भी है, उस रुट पर लैंसडौन से लगभग पच्चीस किलोमीटर पहले एक क़स्बा जिसे दुगड्डा कहते हैं, स्थित है। अभी तक के मानव और हिंसक पशु कन्फ्लिक्ट में दुगड्डा आदमखोर सबसे मशहूर है। लैंसडौन से हिमालय की चीन की तरफ की बर्फीली पहाड़ी चोटियां वहां से दिखाई देती हैं।

आज़ादी के बाद चरागाह लुप्त, वन लुप्त, जंगली पेड़-पौधे नदारद और अन्तोगत्वा जंगली जीव जिसमें पक्षी भी शामिल हैं, सभी लुप्त, कहाँ गए ये सब? इतनी आज़ादी मिली कि हम सब मारकर खा गए और चरागाह पेड़ आदि काट कर ईंधन अथवा अन्य किसी काम में ले लिए गए। कहने का तात्पर्य कि आज़ादी के बाद मानव की भूंख इतनी बढ़ी कि कुछ छोड़ा ही नहीं। मानव के एक खास वर्ग का पेट (तोंद) देखकर ही अनुमान लगाया जा सकता है कि तोंद के आकार और भण्डारण क्षमता में इतना विशाल परिवर्तन आखिर हुआ क्यों और कैसे?अब अगर हिंसक पशु जंगल में अपना आहार लेने में समर्थ नहीं हैं तो वे आबादी की तरफ ही अग्रसर होंगे और मनुष्य सहित सभी प्राणिओं को अपना शिकार बनायेगे इसमें कोई संशय नहीं। सरकार ने हिंसक वन्य जानवरों के लिए अब सैंक्चुअरी बना कर बंधक बनाया हुआ है। उनके आहार के लिए कटे हुए पालतू पशुओं का मांस भिजवाया जाता है। क्या इस प्रणाली से वन्य और हिंसक पशु सहज रह सकेंगे ?

जयपुर की ही एक घटना है वहां जो व्यक्ति बाघ के रहने की जगह सफाई करता था बाघ ने उसे उसके गहरे चैम्बर में जाते ही दबोच लिया और शरीर के चीथड़े कर दिए। सरकार को अपनी सोच बदलनी होगी कि ऐसे हिंसक जानवरों को कभी पालतू नहीं बनाया जा सकता। कुछ अरब देशों के बादशाहों की नक़ल करना सरकारें त्यागें, अन्यथा हिंसक पशुओं की देखरेख करने वाले लोग हिंसक पशुओं के शिकार ही बनेगे।

मैंने सुना है की राजस्थान और मध्यप्रदेश की सरकारें चीता अन्य देशों से मगाकर अपने प्रांतों में आज़ाद विचरण के लिए छोड़ना चाहती है। दोनों प्रांतो की सरकारों से वहां की जनता पूंछे कि ग्रामीण परिवेश में रहने वाली जनता के लिए ये खतरा क्यों बनाना चाहती है। जिस सरकार से अपनी आबादी ठीक से नहीं सभल पा रही, हिंसक पशुओं को संभालने के लिए उनके पूर्वज देव लोक से पृथ्वी पर उतरेंगे क्या? बेहूदा सोच, मानसिक दिवालियेपन का द्योतक और मानव हित के कार्यों से ध्यान भटकाने की मंशा।

अधिक और लिखने की मेरी मंशा नहीं, विवेकशील को इशारा काफी। अन्यथा मैं फिर अपनी बात दोहराऊंगा कि आज़ादी से पूर्व हम भले ही गुलाम रहे हों, वर्तमान से कहीं अधिक सुरक्षित और स्वतंत्र थे। अपनी प्राथमिकता मनुष्य पहले या हिंसक पशु पहले? यह हिंसकता मनुष्यों में अपनी ही प्रजाति के विरुद्ध भी अब कुछ वर्षों से अधिकाधिक रूप से दृष्टिगोचर हो रही है।

–प्रो. वीर बहादुर सिंह,
डेरी व् खाद्य विज्ञ, पूर्व कुलपति
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

शिक्षा विभाग में शिक्षकों के समायोजन का सिलसिला शुरु

बीकानेर, (निस)। शिक्षा विभाग ने राजस्थान के सात हजार टीचर्स का सही पद पर समायोजन करने का सिलसिला शुरू कर दिया है। इसके लिए जिला शिक्षा अधिकारी से माध्यमिक शिक्षा निदेशक तक से आदेश जारी होने शुरू हो गए हैं। प्रदेश के हिन्दी माध्यम स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में तब्दील करने के कारण करीब 35 हजार टीचर्स अधिशेष हो गए थे। इनमें कुछ को पूर्व विद्यालयों में ही समायोजित कर दिया गया था, जिसके बाद अधिशेष शिक्षकों की संख्या घटकर सात हजार हो गई। अब इन सात हजार का भी समायोजन किया जा रहा है।

दरअसल, कांग्रेस सरकार ने बड़ी संख्या में हिन्दी माध्यम स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में तब्दील कर दिया था। ऐसे में हिन्दी माध्यम स्कूल के टीचर जरूरत से ज्यादा हो गए, यानी अधिशेष हो गए। कुछ टीचर्स इसलिए अधिशेष हो गए, क्योंकि स्कूल को अपर प्राइमरी से सेकंडरी और सेकंडरी से सीनियर सैकंडरी कर दिया गया। ऐसे में जरूरत से ज्यादा टीचर्स की संख्या35 हजार तक पहुंच गई। पिछले कुछ महीनों में अलग-अलग आदेश जारी करके शिक्षा विभाग ने क्रमोन्नत स्कूल के टीचर्स को वहीं पर पदस्थापित कर दिया। अधिशेष मानने के बजाय उसका नियमित पदस्थापन हो गया। वहीं हिन्दी माध्यम से मुक्त हुए टीचर्स ही अधिशेष रह गए। अब तक इनका वेतन अलग-अलग स्कूलों से उठ रहा था, जबकि वो काम किसी अन्य स्कूल में कर रहे थे। ऐसे में अब हर जिले में अलग-अलग आदेश जारी करके समायोजन किया जा रहा है। अकेले बीकानेर जिले में 1900 टीचर्स को समायोजित किया जा रहा है। इनमें बड़ी संख्या में टीचर्स की स्कूल भी बदल रही है। समायोजन के लिए लेवल वन के टीचर्स को लेवल टू के पद पर भी समायोजित किया जा रहा है। वहीं माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने अलग अलग आदेश जारी करके प्रिंसिपल, वाइस प्रिंसिपल और लेक्चरर का समायोजन नए स्कूल में किया हे। इसमें बड़ी संख्या में लेक्चरर व प्रिंसिपल-वाइस प्रिंसिपल ने सिफारिश के दम पर बेहतर स्कूल में समायोजन करवा लिया, जबकि कुछ को इच्छा के विपरीत घर से दूर के स्कूल मिले हैं।

सांवलिया जी सेठ के दो माह का भंडार व भेंट कक्ष का चढ़ावा लगभग 35 करोड़ रुपए के पार

साथ ही 186 किलो चांदी व 2 किलो 794 ग्राम सोना भी प्राप्त हुआ

मंडफिया। मेवाड़ अंचल के प्रमुख तीर्थ स्थल भगवान श्री सांवलिया जी सेठ मंडफिया के दरबार में गत 30 नवंबर चतुर्दशी को खोले गए भंडार की शेष रही राशि की गिनती छह चरणों में संपन्न हुई। भंडार की गिनती मंदिर बोर्ड अध्यक्ष भेरुलाल गुर्जर की उपस्थिति में हुई। मंदिर के प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर ने बताया कि छठे चरण में हुई भंडार गिनती में 13 लाख 93 हजार 81 रुपए नगद प्राप्त हुए। इससे पूर्व पांच चरणों में हुई गिनती में 25 करोड़ 47 लाख 75 हजार 500 रुपए नगद प्राप्त हुए थे।

उन्होंने बताया कि छह चरणों की गिनती को मिलाकर कुल 25 करोड़ 61 लाख 67 हजार 581 रुपए की नगद प्राप्त हुए। प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि इसके अलावा भंडार से निकले सोने चांदी का तोल भी किया गया। भंडार से 2 किलो 290 ठाम सोना व 58 किलो 900 ठाम चांदी प्राप्त हुई। उन्होंने बताया कि विभिन्न भक्तों द्वारा मंदिर कार्यालय में 504 ठाम 560 मिली ठाम सोना व 128 किलो 930 ठाम चांदी भेंट स्वरूप जमा हुई। प्रशासनिक अधिकारी टेलर ने बताया कि इसके

■ भंडार की गिनती छह चरणों में संपन्न हुई

अलावा विभिन्न भक्तों ने विभिन्न स्थानों से मनी ऑर्डर भेजकर,ऑनलाइन द्वारा एवं स्वयं उपस्थित होकर मंदिर कार्यालय में 09 करोड़ 30 लाख 27 हजार 427 रुपए भेंट जमा किए।

भगवान श्री सांवलिया जी सेठ के दो माह के भंडार एवं भेंट कक्ष कार्यालय से कुल 34 करोड़ 91 लाख 95 हजार 08 रुपए का नगद चढ़ावा मिला। भंडार गिनती में भादसोड़ा नायब तहसीलदार शिव शंकर पारीक, मंदिर बोर्ड सदस्य भेरूलाल सोनी, संजय कुमार मंडोवरा, अशोक शर्मा, ममतेश शर्मा, श्रीलाल पाटीदार, भादसोड़ा सरपंच एवं मंदिर बोर्ड सदस्य शंभू लाल सुथार, कांठोस युवा नेता सुरेश चंद्र गुर्जर, प्रशासनिक अधिकारी नंदकिशोर टेलर, मंदिर प्रभारी राजेंद्र कुमार शर्मा, लेखाधिकारी राघव शर्मा, सुरक्षा प्रभारी भेरू गिरी गोस्वामी, संस्थापन प्रभारी लेहरी लाल गाडरी, मनोहर लाल चौबीसा, दीपक तिवारी सहित चुनिंदा मंदिर कर्मचारी एवं बैंक कर्मी उपस्थित थे।

भंडार एवं भेंट कक्ष से प्राप्त सोने-चांदी का तोल करते मंदिर पदाधिकारी।

राशिफल रविवार 8 दिसम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, शतभिषा नक्षत्र सायं 4:03 तक, वज्र योग रात्रि 3:53 तक, वणिज करण प्रातः 9:45 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा प्रातः 9:45 से रात्रि 8:54 तक रहेगी। आज पंचक, भानु सप्तमी है। आज नरसी मेहता जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:25 से 9:43 तक, लाभ-अमृत 9:43 से 12:19 तक, शुभ 1:36 से 2:54 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:08, सूर्यास्त 5:29

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

कन्या
विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला
महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

मीन
घर-परिवार के खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।